



राजपत्र, हिमाचल प्रदेश (असाधारण)

हिमाचल प्रदेश राज्यशासन द्वारा प्रकाशित

शिमला, बुधवार, 2 मई, 1984/12 बैशाख, 1906

हिमाचल प्रदेश सरकार

विधि विभाग

अधिसूचना

शिमला-171002, 25 अप्रैल, 1984

सं० एल० एल० आर०-ई(9)-41/82.—समाज का निर्धन और दुर्बल वर्ग अपने विधिक अधिकारों को प्रवर्तित कराने में अक्षम है ;

भारत के संविधान की अनुच्छेद 39-क निःशुल्क विधिक सहायता का उपबन्ध करता है और राज्य सरकार निर्धन और दुर्बल वर्गों को निःशुल्क विधिक सहायता उपलब्ध कराने के लिए बाध्य है ;

निर्धनों को निःशुल्क विधिक सहायता उपलब्ध कराने की समस्या राष्ट्रीय नीति का रूप धारण कर चुकी है और यह विषय राज्य सरकार का ध्यान आकर्षित करता रहा है ;

और इसे समय निर्धनों को निःशुल्क विधिक सहायता उपलब्ध कराने के लिए हिमाचल प्रदेश राज्य गरीबों को विशेष कानूनी सहायता नियम, 1980 प्रवृत्त है और राज्य सरकार की राय है कि भारत सरकार द्वारा गठित विधिक सहायता स्कीम कार्यान्वयन समिति द्वारा परिचालित माडल कानूनी सहायता स्कीम के अनुरूप और राज्य में विधिक सहायता कार्यक्रम के प्रभावकारी कार्यान्वयन को अधिक बल प्रदान करने के लिए, हिमाचल प्रदेश विधान सभा की प्राक्कलन समिति की सिफारिशों पर, पूर्वोक्त नियमों में परिवर्तन करना आवश्यक हो गया है ;

अतः अब आर्थिक और सामाजिक रूप से दुर्बल वर्गों को अपन विधिक अधिकारों का प्रवर्तन कराने में सुविधा प्रदान करने के लिए, हिमाचल प्रदेश के राज्यपाल निम्नलिखित नियम बनाते हैं :—

हिमाचल प्रदेश विधिक सहायता नियम, 1984

1. संक्षिप्त नाम, विस्तार और प्रारम्भ.—(1) इन नियमों का संक्षिप्त नाम हिमाचल प्रदेश विधिक सहायता नियम, 1984 है।

(2) इन नियमों का विस्तार सम्पूर्ण हिमाचल प्रदेश राज्य पर है।

(3) ये नियम तुरन्त प्रवृत्त होंगे।

2. बोर्ड का गठन.—(1) इन नियमों के प्रयोजनों को कार्यान्वित करने के लिए राज्य सरकार एक बोर्ड का गठन करेगी और इसका नाम “हिमाचल प्रदेश विधिक सहायता बोर्ड” होगा।

(2) हिमाचल प्रदेश विधिक सहायता बोर्ड निम्नलिखित से मिलकर बनेगा:—

- | | |
|---|--------------------|
| (1) मुख्य मंत्री | अध्यक्ष (पदेन) |
| (2) मुख्य न्यायाधीश | सह-अध्यक्ष (पदेन) |
| (3) उच्च न्यायालय का आसीन या मेवानिवृत्त न्यायाधीश (अध्यक्ष द्वारा नामनिर्दिष्ट किया जाएगा)। | कार्यापालक अध्यक्ष |
| (4) भारत सरकार द्वारा गठित विधिक सहायता स्कीम कार्यान्वयन समिति का अध्यक्ष | पदेन सदस्य |
| (5) विधि मंत्री | पदेन सदस्य |
| (6) महाधिवक्ता | पदेन सदस्य |
| (7) मुख्य सचिव | पदेन सदस्य |
| (8) सचिव (विधि) हिमाचल प्रदेश सरकार | पदेन सदस्य |
| (9) सचिव (वित्त) हिमाचल प्रदेश सरकार | पदेन सदस्य |
| (10) अध्यक्ष, हिमाचल प्रदेश विधिज्ञ परिषद् | पदेन सदस्य |
| (11) राज्य विधान सभा का एक सदस्य (राज्य सरकार द्वारा निर्दिष्ट किया जाएगा)। | पदेन सदस्य |
| (12) विधि व्यवसाय से दो प्रतिनिधि (राज्य सरकार द्वारा यह सह अध्यक्ष के परामर्श से नामनिर्दिष्ट किए जाएंगे)। | सदस्य |
| (13) स्त्रियों का एक प्रतिनिधि (राज्य सरकार द्वारा नामनिर्दिष्ट किया जाएगा)। | सदस्य |
| (14) अनुसूचित जातियों का एक प्रतिनिधि (राज्य सरकार द्वारा नामनिर्दिष्ट किया जाएगा)। | सदस्य |
| (15) अनुसूचित जन-जातियों का एक प्रतिनिधि (राज्य सरकार द्वारा नामनिर्दिष्ट किया जाएगा)। | सदस्य |
| (16) औद्योगिक श्रमिकों का एक प्रतिनिधि (राज्य सरकार द्वारा नामनिर्दिष्ट किया जाएगा)। | सदस्य |
| (17) विशेष सचिव (विधि) हिमाचल प्रदेश सरकार | सदस्य-सचिव। |

3. कार्य पालिका समिति.—(1) बोर्ड की एक कार्यपालिका समिति होगी जो अध्यक्ष, सहअध्यक्ष, कार्यपालक अध्यक्ष, महाधिवक्ता, सचिव (विधि) स्त्रियों, अनुसूचित जातियों और अनुसूचित जनजातियों के बोर्ड के प्रतिनिधियों, राज्यों की विधिक सहायता स्कीम कार्यान्वयन समिति द्वारा सहयोजित एक व्यक्ति (जिसे इसमें इसके पश्चात केन्द्रीय समिति कहा गया है), से मिलकर बनेगी। केन्द्रीय समिति का अध्यक्ष, कार्यपालिका समिति का पदेन सदस्य होगा।

(2) कार्यपालिका समिति को दो से अधिक सदस्य सहयोजित करने की शक्ति होगी।

4. सदस्य सरकार के प्रसादपर्यन्त पर धारण करेंगे.—(1) बोर्ड और समिति के पदेन सदस्यों से भिन्न सभी राज्य सरकार के प्रसादपर्यन्त पद धारण करेंगे।

(2) जहां भी किसी व्यक्ति को उसके द्वारा पारित पद या पदवी के कारण बोर्ड या उसकी समिति के रूप में नामनिर्दिष्ट या नियुक्त किया गया है वहां वह यदि वह ऐसा पद या पदवी धारण नहीं करता है तो तत्काल ऐसा सदस्य नहीं रहेगा।

5. सदस्यों द्वारा त्याग पत्र.—बोर्ड या उसको कार्यपालिका समिति का नामनिर्दिष्ट या नियुक्त सदस्य, अध्यक्ष को सम्बोधित त्यागपत्र प्रस्तुत करके अपना पद त्याग सकेगा।

6. आकस्मिक रिक्तियों का भरा जाना.—बोर्ड या उसकी समिति के सदस्य की, त्याग पत्र या मृत्यु द्वारा या अन्यथा हुई कोई रिक्ति, यथा साध्य शीघ्र मूल नियुक्ति की रिति से भरी जाएगी।

(2) बोर्ड या उसकी कार्यपालिका की कोई कार्रवाई या कार्यवाही केवल इस आधार पर कि उसमें कोई रिक्ति थी अधिमान्य नहीं होगी।

7. मानदेय और अन्य भत्ते.—(1) यदि कार्यपालिका अध्यक्ष उच्च न्यायालय का आसीन न्यायाधीश हो तो उसे प्रति मास 10000-रुपये नियत मानदेय संदत किया जाएगा।

(2) बोर्ड के कार्यपालक अध्यक्ष और सदस्य सचिव, से भिन्न अन्य सदस्य किसी मानदेय के हकदार नहीं होंगे।

(3) बोर्ड के ऐसे सदस्यों को जो राज्य विधान सभा के सदस्यों में से नामनिर्दिष्ट किए गए हैं ऐसे सदस्यों के रूप में उन्हें अनुज्ञेय यात्रा और दैनिक भत्ते संदत किए जाएंगे। पदेन सदस्य उन्हें लागू नियमों के अनुसार यात्रा और दैनिक भत्ते के हकदार होंगे। अन्य सदस्य ऐसे यात्रा और दैनिक भत्ते के हकदार होंगे जैसा राज्य सरकार के साधारण नियमों को अधीन उच्चतम वेतन श्रेणी के प्रथम वर्ग के अधिकारियों को अनुज्ञेय है।

8. सदस्य सचिव.—(1) बोर्ड का एक पूर्णकालीन सदस्य सचिव होगा जो उच्चतर न्यायिक सेवा के कांडर का सेवारत न्यायिक अधिकारी होगा। उसकी नियुक्ति राज्य सरकार द्वारा सह-अध्यक्ष के परामर्श से की जाएगी।

(2) उसे, उस वेतन और भत्तों के अतिरिक्त जिसके लिए वह अपन वेतनमान में हकदार है, 250 रु० प्रति मास विशेष वेतन संदत किया जाएगा। सदस्य सचिव बोर्ड की सम्पत्ति और निधि की अभिरक्षा और प्रबन्ध और बोर्ड का सही और उचित लेखा रखने के लिए उत्तरदायी होगा और वह उनकी नियतकाल पर संपरीक्षा और जांच करवाएगा।

(3) सदस्य सचिव ऐसे अन्य कर्तव्यों और कृत्यों का निर्वहन करेगा जो समय-समय पर उसे बोर्ड या, कार्यकारिणी द्वारा समनुदेशित किए जाए।

9. बोर्ड के अधिकारी और कर्मचारी.—बोर्ड उतने अधिकारियों और कर्मचारियों को नियुक्ति कर सकेगा जितने वह इन नियमों के अधीन अपने कृत्यों के दक्षतापूर्ण पालन के लिए आवश्यक समझ और बोर्ड के ऐसे

अधिकारी और कर्मचारी सेवा के ऐसे नियमों और शर्तों द्वारा शासित होंगे जो समय-समय पर बोर्ड द्वारा निर्धारित की जाएं।

10. बोर्ड की शक्तियां और कृत्य.—(1) राज्य सरकार के साधारण नियंत्रण के अधीन रहते हुए बोर्ड का यह कर्तव्य होगा कि वह राज्य में समुदाय के दुर्बल वर्गों को निःशुल्क विधिक सेवा उपलब्ध कराने के लिए, विधिक सहायता कार्यक्रम स्थापित करने के लिए कदम उठाए। राज्य बोर्ड यह प्रयास करेगा कि वह बोर्ड द्वारा बनाई गई किसी स्कीम या नियमों के उपबन्धों के अधीन रहते हुए निःशुल्क विधिक सेवा के उपबन्ध की व्यवस्था करें जिसके अन्तर्गत किसी न्यायालय में या लोक प्राधिकारी के समक्ष किन्हीं कार्यवाहियों में विधिक सहायता भी है।

(2) बोर्ड, राज्य में विधिक सेवा कार्यक्रम के प्रशासन और कार्यन्वयन का, सम्पूर्ण भारसाधक होगा और वह विशेषतः निम्नलिखित शक्तियों का प्रयोग और कृत्यों का पालन करेगा, अर्थात्:—

- (क) राज्य सरकार द्वारा उसके व्ययनाधीन रखी गई स्कीमों में से विभिन्न समितियों को निधि का आवंटन करना;
- (ख) विभिन्न समितियों के कार्याकरण का नियंत्रण, विनियमन और पर्यवेक्षण करना;
- (ग) नीतियां निर्धारित करना और विभिन्न समितियों को विधिक सेवा कार्यक्रम के समुचित प्रशासन और कार्यन्वयन के लिए और उनके कर्तव्यों और कृत्यों के समुचित और पर्याप्त निर्वहन के लिए साधारण या विशेष, निदेश देना;
- (घ) विभिन्न समितियों से समय-समय पर, ऐसी रिपोर्टें, विवरणियां और जानकारी मांगना और प्राप्त करना जैसी विधिक कार्यक्रम के प्रशासन और कार्यन्वयन की बावत आवश्यक समझी जाए;
- (ङ) पूर्ववर्ती वित्त वर्ष में विधिक सेवा कार्यक्रम के प्रशासन और कार्याकरण के सम्बन्ध में एक साधारण रिपोर्ट तैयार करना समेकित करना और राज्य सरकार को प्रति वर्ष मई के प्रथम सप्ताह तक प्रस्तुत करना ;
- (च) विधिक कार्यवाहियों में मुलह और समझौतों को प्रोत्साहित और अभिवर्धित करना ;
- (छ) समुदाय के दुर्बल वर्गों में, सामाजिक कल्याण विधानों और अन्य अधिनियमितियों द्वारा उन्हें प्रदत्त अधिकारों, प्रसुविधाओं और विशेषाधिकारों के बारे में, विधिक शिक्षा को प्रोत्साहन देना और चेतना जागृत करना ;
- (ज) ग्रामीण क्षेत्रों में लोगों का केन्द्रीय सरकार या राज्य सरकार द्वारा, समय-समय पर, किए गए भूमि सम्बन्धी सुधारों और उन्हें उपलब्ध कराई गई सुविधाओं के बारे में जानकारी देना और जहां आवश्यक हो विधिक सेवा प्रदान करना ;
- (झ) स्त्रियों, बंधुआ श्रमिकों, औद्योगिक कर्मचारियों, कृषि श्रमिकों, अभिधारियों, कृषकों, अनुसूचित जातियों और अनुसूचित जन-जातियों और समुदाय के अन्य दुर्बल वर्गों से सम्बन्धित महत्वपूर्ण विधानों के और सामाजिक और आर्थिक सुधारों से संबन्धित विधानों के भी, प्रचार की व्यवस्था करना ;
- (ञ) समुदाय के दुर्बल वर्गों के सदस्यों को आवश्यक कानूनी अपेक्षाओं के अनुपालन में सहायता प्रदान करना जिससे केन्द्रीय या राज्य सरकार द्वारा, सर्वसाधारण या उसके किसी वर्ग के कल्याण के लिए, चलाई गई विभिन्न स्कीमों के अधीन प्रसुविधाएं सुनिश्चित की जा सकें ;
- (ट) ग्रामीण क्षेत्रों में और गन्दी बस्तियों में समुदाय के दुर्बल वर्गों को विधिक सेवा पहुंचाने के प्रयोजन से विधिक सहायता शिविर संचालित करना ;
- (ठ) विवादों में स्वेच्छया समझौते करवाने के प्रयोजन से विभिन्न क्षेत्रों में लोक न्यायालय लगाने की व्यवस्था करना ;
- (ड) सह-विधिक सेवा के लिए समाज सुधारकों का काडर तैयार करना ;

- (ढ) विभिन्न समितियों को उनके अपने-अपने क्षत्राधिकार में विधिक सेवा केन्द्र स्थापित करने के लिए सहायता प्रदान करना ;
- (ण) विश्वविद्यालय के विधिक महाविद्यालयों और विधि संकायों को समुदाय के दुर्बल वर्गों को निःशुल्क विधिक सेवा प्रदान करने के लिए परियोजनाएं स्थापित करने के लिए प्रोत्साहन देना और ऐसी परियोजनाएं चलाने के लिए उन्हें सहायता प्रदान करना ;
- (त) और उससे सम्बद्ध क्रियाकलापों में भाग लेने सहित, विधिक सेवा कार्यक्रम के सभी पहलुओं की जिसके अन्तर्गत लोक चेतना जागृत करना भी है अभिवृद्धि के लिए, संगोष्ठियां, सम्मेलन और अभियान करना और उनका संचालन करना ;
- (थ) उन अन्यायों के निराकरण के उद्देश्य से जो निर्धनों को सहन करने पड़ते हैं निर्धनों को प्रभावित करने वाली विधि के क्षेत्र में अनुसंधान, प्रयोग और परिवर्तन करना और उसमें अभिवृद्धि करना जिससे समुदाय के निर्धन वर्गों के हितों की सुरक्षा के उद्देश्य से विधि में मौलिक संस्थागत परिवर्तन और सुधार प्रभावी किए जा सकें ;
- (द) राज्य सरकार को न्यायालयों की पद्धति और प्रक्रिया में सुधार की वास्तव सिफारिश प्रस्तुत करना जिससे मुकदमें बाजी में व्यय और विलम्ब कम किया जा सकें ;
- (ध) समुदाय के दुर्बल वर्गों की सामाजिक और आर्थिक स्थिति में सुधार और सामाजिक कल्याण विधानों को उनके लिए प्रभावकारी बनाने के प्रयोजनार्थ राज्य सरकार को विधि में सुधार के ऐसे उपायों का जैसे वह आवश्यक समझे, मुझाव देना और सिफारिश करना और प्रशासनिक निकायों या प्राधिकरणों का ध्यान उनकी शिकायतों की और आकर्षित करना और ऐसी शिकायतों के प्रति तोष के लिए दबाव डालना ;
- (न) उनकी समस्याओं और कठिनाइयों का पता लगाने के उद्देश्य से समुदाय के निर्धन वर्गों की जीवन सम्बन्धी परिस्थितियों का सामाजिक, विधिक सर्वेक्षण और अनुसंधान करना और यह सुनिश्चित करना कि सामाजिक विधान उस उद्देश्य और प्रयोजन की प्राप्ति में कहां तक सफल हुआ है । जिसके लिए उसे अधिनियमित किया गया है और उस प्रयोजनार्थ सामाजिक कार्यकर्ताओं और छात्र बल का प्रयोग करना ;
- (प) ऐसे विभिन्न सेवा कार्यक्रमों के, उसका भार बोर्ड और उसकी विभिन्न समितियों ने अपने ऊपर लिया है के निर्धारण और मूल्यांकन के उद्देश्य से विशेषज्ञ समितियां नियुक्त करना ;
- (फ) ऐसी अन्य कार्यवाहियां करना जो विधिक सेवा कार्यक्रम के उद्देश्य से आनुषंगिक और उसकी साधक हैं ; और
- (ब) विधिक सेवा कार्यक्रम के प्रभावकारी कार्यान्वयन के प्रयोजनार्थ, ऐसे अन्य कर्तव्यों का अनुपालन और कृत्यों का निर्वहन करना जैसा राज्य सरकार निदेश दें ।

11. कार्यपालिका समिति की शक्तियां और कृत्य.—कार्यपालिका समिति, बोर्ड का एक कार्यपालक अंग होगा और वह ऐसे किसी निदेश के अधीन रहते हुए, जो बोर्ड द्वारा इस निमित्त समय-समय पर दिया जाए, बोर्ड की समस्त शक्तियों और कृत्यों का अनुपालन करेगी ।

12. कार्य का संचालन.—इन नियमों के उपबन्धों के अधीन रहते हुए, बोर्ड और उसके कार्यपालिका समिति के अधिवेशनों को संचालित करने की प्रक्रिया ऐसी होगी जो बोर्ड अवधारित करे ।

13. बैठकों का कार्यवृत्त.—बोर्ड और इसकी कार्यपालिका समिति के प्रत्येक अधिवेशन में उपस्थित सदस्यों नामों और उसकी कार्यवाहियों का अभिलेख रखा जाएगा । अभिलेख, यथा स्थिति, बोर्ड के या उसकी कार्यपालिका समिति के सदस्यों के लिए सभी युक्तियुक्त समय के दौरान, निःशुल्क निरीक्षण के लिए खुला रहेगा ।

14. गणपूर्ति.—बोर्ड या इसकी कार्यपालिका समिति के अधिवेशन में गणपूर्ति, सुसंगत समय पर बोर्ड या कार्यपालिका समिति की कुल सदस्य संख्या के एक तिहाई से होगी ।

15. समितियों का गठन.—बोर्ड सहायता विभिन्न समितियों, जिसके अन्तर्गत उच्च न्यायालय जिला और उपमण्डलीय विधिक, सहायता समितियां भी हैं, ऐसी स्कीम/फीमों के अनुसार गठित करेगा जो बोर्ड द्वारा इस नियमित राज्य सरकार के अनुमोदन से बनाई जाए/जाए।

16. निःशुल्क विधिक सहायता के लिए पावता.—प्रत्येक नागरिक जिसकी, समस्त स्त्रोतों से हुई आय प्रतिवर्ष 7200/- रुपये से अधिक न हो, निःशुल्क विधिक सहायता का पात्र होगा :

परन्तु सम्बन्धित विधिक सहायता समिति का अध्यक्ष, बोर्ड के सह-अध्यक्ष अनुमोदन से किसी अन्य उपयुक्त मामले में विधिक सहायता प्रदान कर सकेगा।

(2) आय की बाबत यह परिसीमा, किसी सामाजिक और शैक्षणिक रूप से पिछड़े वर्ग के नागरिकों के लिए लागू नहीं होगी।

(3) बोर्ड और उसके द्वारा गठित समिति स्वप्रेरणा से या विरोधी पत्रकार द्वारा इस निमित्त किए गए आवेदन पर, सहायता प्राप्त व्यक्ति को निःशुल्क विधिक सेवा का दिया जगना प्रत्याहृत कर सकेगा यदि यह मालूम हो जाए कि ऐसी विधिक सेवा के खर्चों को पूरा करने के लिए ऐसे व्यक्ति के पास पर्याप्त वित्तीय साधन हैं।

(4) इसमें किसी बात के होते हुए भी बोर्ड निम्नलिखित के लिए स्वयमेव कार्यवाहियां आरम्भ कर सकेगा या सहायता प्रदान कर सकेगा :—

(क) अत्याधिक लोकमहत्व के मामलों में; या

(ख) ऐसे परीक्षण के मामले में, जिसके निर्णय से समुदाय के दुर्बल वर्गों के बहुत से अन्य व्यक्तियों के मामलों पर प्रभाव पड़ने की संभावना है; या

(ग) ऐसे किसी विशेष मामले में जो अभिलिखित न किए जाने वाले कारणों से विधिक सहायता के योग्य समझा जाता है।

17. बोर्ड की निधियां.—(1) राज्य सरकार, इस निमित्त विधि द्वारा सम्यक् रूप से किए गए विनियोग के अधीन, विधिक सहायता कार्यक्रम के कार्यान्वयन के लिए आवश्यक रकम समय-समय पर बोर्ड के व्ययनाधीन रखेगी। प्रारम्भ में चार लाख रुपये प्रति वर्ष का अनुदान बोर्ड के व्ययनाधीन रखा जायेगा।

(2) बोर्ड, अपने विधिक सहायता कार्यक्रम के लिए दान और अनुदान प्राप्त और स्वीकार करने का भी हकदार होगा।

(3) खर्च, प्रभार और व्यय जो विधिक सहायता प्राप्त मुकद्दमा के परिणाम स्वरूप वसूल किए जा सकेंगे और उसके द्वारा प्राप्त सभी अन्य रकमों बोर्ड की निधियों में जमा की जाएंगी :

परन्तु इस प्रकार जमा की गई निधियों का प्रयोग केवल निःशुल्क विधिक सेवा उपलब्ध कराने के लिए ही किया जाएगा और उसका कोई भी भाग, बोर्ड कार्यपालिका समिति या विधिक सहायता समितियों से सम्बन्धित प्रशासनिक व्ययों में खर्च नहीं किया जाएगा।

18. लेखा बही और खातों का रखा जाना.—(1) बोर्ड समुचित लेखा बही और ऐसे अन्य खाते रखेगा जो अपेक्षित हो और लेखाओं की वार्षिक विवरणी तैयार कराएगा।

(2) बोर्ड, अपने लेखा की लेखा परीक्षा प्रतिवर्ष ऐसे व्यक्ति से कराएगा जो राज्य सरकार द्वारा निर्दिष्ट किया जाए।

(3) इसके लेख की लेखा परीक्षा किए जाने के तुरन्त पश्चात् बोर्ड उस पर अपनी टीका-टिप्पणी सहित, लेखा परीक्षा रिपोर्ट राज्य सरकार को अर्पित करेगा।

(4) लेखा परीक्षा रिपोर्ट की उस पर टीका-टिप्पणी सहित, संवीक्षा के पश्चात् बोर्ड ऐसे निदेशों का अनुपालन करेगा जो राज्य सरकार देना ठीक समझे।

19. वार्षिक रिपोर्टों और लेखा परीक्षा रिपोर्टों का पटल पर रखा जाना.—नियम 10 के उप-नियम (2) के खण्ड (3) में निर्दिष्ट प्रशासनिक रिपोर्ट नियम 18 के उप-नियम (1) के अधीन तैयार की गई लेखा की वार्षिक विवरणी और नियम 18 के उप-नियम (3) के अधीन बोर्ड द्वारा प्रस्तुत की गई लेखा परीक्षा रिपोर्ट सहित, उसके बोर्ड से राज्य सरकार द्वारा प्राप्त किए जाने के पश्चात्/यथा शक्य शीघ्र विधान सभा के पटल पर रखी जाएगी।

20. कठिनाइयों का निराकरण.—(1) यदि इन नियमों के उपबन्धों को प्रभावी करने में कोई कठिनाई उत्पन्न होती है तो राज्य सरकार, शासकीय राजपत्र में प्रकाशित आदेश द्वारा ऐसे उपबन्ध कर सकेगी या इन नियमों के अधीन गठित किसी समिति या बोर्ड को ऐसे निदेश दे सकेगी जो इन नियमों के प्रयोजनों से असंगत न हो और जो उस कठिनाई के निराकरण के लिए उसे आवश्यक या समीचीत प्रतीत हों।

(2) बोर्ड और समितियां ऐसे सभी निदेशों का अनुसरण करेंगीं जो समय-समय पर, उप-नियम (1) के अधीन दिए जाएं।

21. अस्थायी उपबन्ध.—इन नियमों में किसी बात के होते हुए भी हिमाचल प्रदेश राज्य गरीबों को कानूनी सहायता के नियम, 1980 के अधीन गठित वर्तमान समितियां, तब तक कार्य करती रहेंगीं जब तक हिमाचल प्रदेश राज्य विधिक सहायता नियम, 1984 के अधीन, नई समितियों का गठन नहीं कर दिया जाता है।

22. निरसन और व्यावृत्ति.—(1) नियम 21 के उपबन्धों के अधीन रहते हुए, हिमाचल प्रदेश राज्य गरीबों को कानूनी सहायता के नियम, 1980, एतद्द्वारा निरसित किया जाता है।

(2) इन नियमों के अधीन की गई कोई बात या कार्रवाई (उक्त नियमों के अधीन दिए गए किन्हीं निदेशों और आदेशों को सम्मिलित करते हुए) इन नियमों के अधीन वैसे ही की गई समझी जाएगी मानों यह नियम उस दिन, जब ऐसी बात या कार्रवाई की गई थी, प्रवृत्त थे।

हिमाचल प्रदेश के राज्यपाल के
आदेश से।

वी० पी० भटनागर,
सचिव (विधि),
हिमाचल प्रदेश सरकार।

[Authoritative English text of the Government Notification No. LLR-E (9) 41/82, dated 25-4-84, as required under Clause (3) of Article 348 of the Constitution of India].

LAW DEPARTMENT

NOTIFICATION

Shimla-2, the 25th April, 1984.

No. LLR-E(9) 41/82.—Whereas the poor and weaker sections of the society are handicapped in enforcing their legal rights;

And whereas Article 39-A of the Consitution of India provides for free legal aid, it is obligatory for the State Government to provide free legal aid to the poor and weaker classes;

And whereas the problem to provide free legal aid to the poor has assumed the nature of a national policy, and that this subject has been engaging the attention of the State Government;

And whereas at present there are Himachal Pradesh State Legal Aid to the Poor Rules, 1980 to provide free legal aid to the poor and that the State Government is of the oponion that it is necessary to amend the aforesaid rules on the pattern of Model Legal Aid Scheme circulated by the Committee for Implementation of the Legal Aid Schemes constituted by the Government of India and recommended by the Estimates Committee of the Himachal Pradesh Vidhan Sabha to give impetus to the effective implementation of the legal aid programme in the State;

Now, therefore, in order to facilitate the enforcement of the legal rights by economically and socially weaker classes of people, the Governor, Himachal Pradesh, is pleased to make the following rules:—

THE HIMACHAL PRADESH LEGAL AID RULES, 1984

1. *Short title, extent and commencement.*—(1) These rules may be called the Himachal Pradesh Legal Aid Rules, 1984.

(2) These rules shall extend to the whole of the State of Himachal Pradesh.

(3) Theses rules shall come into force at once.

2. *Constitution of the Board.*—(1) For carrying out the purposes of these rules, a Board shall be constituted by the State Government, and it shall be known as “The Himachal Pradesh Legal Aid Board.”

(2) The Himachal Pradesh Legal Aid Board shall consist of the following:—

- | | |
|--|----------------------------|
| (i) The Chief Minister | ..Chairman (Ex-Officio) |
| (ii) The Chief Justice | ..Co-Chairman (Ex-Officio) |
| (iii) A sitting or retired Judge of the High Court (to be nominated by the Chairman). | ..Executive Chairman. |
| ((iv) Chairman of the Clommittee for Implementation of the Legal Aid Schemes constituted by the Government of India. | ..Ex-Officio Member. |
| (v) The Law Minister | ..Ex-Officio Member. |
| (vi) The Advocate General | ..Ex-Officio Member. |
| (vii) The Chief Secretary | ..Ex-Officio Member. |
| (viii) The Secretary (Law) to the Government of Himachal Pradesh. | ..Ex-Officio Member. |
| (ix) The Secretary (Finance) to the Government of Himachal Pradesh. | ..Ex-Officio Member. |
| (x) Chairman of the Bar Council of Himachal Pradesh. | ..Ex-Officio Member. |
| (xi) One member of State Legislature (to be nominated by the State Government). | ..Ex-Officio Member. |
| (xii) Two representative of the Legal Profession (to be nominated by the State Government in consultation with the Co-Chairman). | ..Member. |

- (xiii) One representative of women (to be nominated .. *Member*.
by the State Government).
- (xiv) One representative of Scheduled Castes (to be .. *Member*.
nominated by the State Government).
- (xv) One representative of Scheduled Tribes (to be .. *Member*.
nominated by the State Government).
- (xvi) One representative of the Industrial Labour (to be .. *Member*.
nominated by the State Government).
- (xvii) Special Secretary (Law) to the Government .. *Member-Secretary*.
of Himachal Pradesh.

3. *Executive Committee*.—(1) There shall be an Executive Committee of the Board consisting of the Chairman, Co-Chairman, Executive Chairman, the Advocate General, the Secretary (Law), the representatives of Women, Scheduled Castes and the Scheduled Tribes on the Board, one of the persons co-opted by the Committee for Implementation of the Legal Aid Schemes (hereinafter referred to as the Central Committee) for the State and the Member Secretary. The Chairman of the Central Committee will be *ex-Officio* member of the Executive Committee.

(2) The Executive Committee shall have power to co-opt not more than two members.

4. *Members to hold office at the pleasure of the Government*.—(1) All Members of the Board and its Committee, other than the *ex-officio* members, shall hold Office at the pleasure of the State Government.

(2) Wherever any person is nominated or appointed as a member of the Board or its Committee by virtue of the post or office held by him, he shall forthwith cease to be such a member if he ceases to hold such post or office.

5. *Resignation by members*.—A member of the Board or its Executive Committee nominated or appointed, may resign his office by submitting a letter of resignation, addressed to the Chairman.

6. *Filling up the casual vacancies*.—Any vacancy of the member of the Board or its Executive Committee caused by resignation, death or otherwise, shall be filled up as early as may be practicable in the same manner as the original appointment.

(2) The mere existence of any vacancy shall not render any action or proceedings of the Board or its Executive Committee to be invalid.

7. *Honorarium and other allowances*.—(1) If the Executive Chairman is not a sitting Judge of the High Court, he shall be paid a fixed honorarium of Rs.1000/-per month.

(2) The members of the Board, other than the Executive Chairman and the Member Secretary, shall not be entitled to any remuneration.

(3) The members of the Board who are nominated from amongst the members of the State Legislature shall be paid travelling and daily allowances as may be admissible to them as such members. The *ex-officio* members shall be entitled to travelling and daily allowances according to the rules applicable to them. The other members shall be entitled to travelling and daily allowances as admissible to Grade-I Officers in the highest pay range under the normal rules of the State Government.

8. *Member-Secretary.*—(1) The Board shall have a whole time Member-Secretary, who shall be a serving Judicial Officer belonging to the cadre of Higher Judicial Service. He shall be appointed by the State Government in consultation with the Co-Chairman.

(2) He shall be paid a special pay of Rs. 250/-per mensem in addition to the pay and allowances he is entitled to in his own pay-scale. The Member-Secretary shall be responsible for the custody and management of the properties and funds of the Board and for the maintenance of true and proper accounts of the Board and he shall get them audited and checked periodically.

(3) The Member-Secretary shall discharge such other duties and functions as the Board or the Executive Committee, may, from time to time, assign to him.

9. *Officers and services of the Board.*—The Board may appoint as many officers and servants as it may consider necessary for the efficient performance of its functions under these rules and such officers and servants of the Board shall be governed by such rules and conditions of service, as may be, from time to time, laid down by the Board.

10. *Power and functions of the Board.*—(1) Subject to the general control of the State Government, it shall be the duty of the Board to take steps to establish a legal aid programme in the State for providing free legal services to the weaker sections of the community in the State. The State Board shall endeavour to arrange for provision of free legal services, including legal aid in any proceedings in any court or before any public authority, subject to the provisions of any scheme or rules framed by the Board.

(2) The Board shall be in overall charge of the administration and implementation of the legal services programme in the State, and shall, in particular, exercise the following powers and and perform the following functions, namely:—

- (a) allot funds to the various Committees from out of the amount placed at its disposal by the State Government;
- (b) control, regulate and supervise the working of the various Committees;
- (c) lay down policies and give general or special directions to the various Committee for the proper administration and implementation of the legal service programme and for proper and adequate discharge of their duties and functions;
- (d) call for and receive from the various Committees from time to time such reports, and information as may be considered necessary in regard to the administration and implementation of the legal services programme;
- (e) prepare, consolidate and submit to the State Government by the first week of May every year a general report regarding the administration and working of the legal services programme during the previous financial Year.
- (f) encourage and promote conciliation and settlement in legal proceedings;
- (g) promote legal literacy and create awareness amongst the weaker sections of the community in regard to the rights, benefits and privileges conferred upon them by social welfare legislation and other enactments;
- (h) enlighten the people in rural areas about agrarian reforms and facilities made available to them by the Central Government or the State Government from time to time and render legal services where necessary;
- (i) arrange for publicity of important legislation concerning women, bonded labour, industrial workers, agricultural labour, tenants, agriculturists, Scheduled Castes and Scheduled Tribes and other weaker sections of the Community, as also legislation dealing with social and economic reforms;

- (j) render assistance to the members of the weaker sections of the society in complying with necessary legal requirements in order to secure the benefits under the various schemes sponsored by the Central or the State Government for the welfare of the public in general, or of any section thereof;
- (k) organise legal aid camps for the purpose of reaching legal services to the weaker sections of the community in rural areas and in slums;
- (l) arrange for holding Lok Nyayalayas in different areas for the purpose of bringing about voluntary settlement of disputes;
- (m) prepare a cadre of social workers for para-legal services;
- (n) help the various Committees to set up legal service centres within their respective jurisdictions;
- (o) encourage law colleges and law faculties of Universities to set up projects for giving free legal service to the weaker sections of the community and to help them in running such projects;
- (p) hold and conduct seminars, conferences and campaigns for promotion of the legal services programme in all its aspects, including creation of public awareness and participate in all activities connected with the same;
- (q) undertake and promote research, experiment and innovation in the areas of law affecting the poor with the object of removing the injustices from which the poor suffer, bringing about fundamental institutional changes and effectuating reforms in the law with a view to making it serve the interest of the weaker sections of the community;
- (r) submit recommendations to the State Government regarding improvements in practice and procedure of the courts so as to reduce the costs and delays in litigation;
- (s) suggest and recommend to the State Government such measures of law reforms as it considers necessary for the purpose of improving the socio-economic conditions of the weaker sections of the community and making social welfare legislation effective for them and draw the attention of the administrative bodies or authorities to their grievances and press for redress of such grievances;
- (t) undertake socio-legal survey and research into the life conditions of the weaker section of the community with a view to ascertaining their problems and difficulties and determining how far and to what extent social legislation has been able to achieve the object and purpose for which it was enacted and to utilise social working and the student force for the purpose;
- (u) appoint expert committees for the purpose of assessment and evaluation of the legal services programme undertaken by the Board and its various Committees;
- (v) carry on such other activities as are incidental and conducive to the objects of the legal services programme; and
- (w) perform such other duties and discharge such other functions, for the purpose of effectively implementing the legal services programme, as the State Government may direct.

11. *Powers and the functions of the Executive Committee.*—The Executive Committee shall be the executive arm of the Board and shall exercise all the powers and perform all the functions of the Board subject to any directions which may be given by the Board from time to time in that behalf.

12. *Conduct of business.*—Subject to the provisions of these rules, the procedure for the conduct of meetings of the Board and its Executive Committee shall be such as may be determined by the Board.

13. Minutes of the meetings.—The record of the names of the members present in each meeting of the Board and its Executive Committee and proceedings thereof shall be maintained. The record shall be open for inspection, free of any charge, during all reasonable hours to the members of the Board or, as the case may be to its Executive Committee.

14. Quorum.—The quorum for the meeting of the Board or its Executive Committee shall be one-third of the total membership of the Board or the Executive Committee at the relevant time.

15. Constitution of Committees.—The Board shall constitute Legal Aid Committees including High Court, District and Sub-Divisional Legal Aid Committees, in accordance with such scheme or schemes as may be framed by the Board in that behalf with the approval of the State Government.

16. Eligibility for free legal aid.—(1) Every citizen whose income from all sources does not exceed Rs. 7,200 per annum shall be eligible for free legal services:

Provided that the Chairman of the concerned Legal Aid Committee may, with the approval of the Co-Chairman of the Board, grant legal aid in any other suitable case.

(2) This limitation as to income shall not apply to any socially and educationally backward classes of citizens.

(3) The Board and the Committee constituted by it may *suo motu* or on an application made in this behalf by opposite party, withdraw the grant of free legal services to an aided person, if it is found that such person has adequate financial resources to meet the cost of such legal services.

(4) Notwithstanding anything contained herein, the Board may itself initiate proceedings or grant aid,—

(a) in cases of great public importance; or

(b) in a test case the decision of which is likely to effect cases of numerous other persons belonging to weaker sections of the community;

(c) in a special case which, for reasons to be recorded in writing, is considered otherwise deserving of legal aid.

17. Funds of the Board.—(1) The State Government shall, under appropriation duly made by law in this behalf, place at the disposal of the Board from time to time, the necessary amounts for implementation of the legal aid programme. Initially, a grant of Rs. four lacs per year may be placed at the disposal of the Board.

(2) The Board shall also be entitled to receive and accept donations and grants to its legal aid programme.

(3) The costs, charges and expenses which may be recovered as a result of legally aided litigation and all other amounts received by it shall be credited to the funds of the Board:

Provided that the funds so credited shall be utilised only for providing free legal services and no part thereof shall be spent on account of administrative expenses connected with the Board, Executive Committee or Legal Aid Committees.

18. Maintenance of account books and ledgers.—(1) The Board shall maintain proper account books and such other ledgers as may be required and shall cause to prepare an annual statement of accounts.

(2) The Board shall cause its accounts audited annually by such a person as may be directed by the State Government.

(3) Immediately after its accounts are audited, the Board shall forward the audit report together with its comments thereon to the State Government.

(4) After scrutiny of the audit report together with its comments thereon, the Board shall comply with such directions as the State Government may deem fit to give.

19. *Laying of annual and audit reports.*—The annual administration report referred to in clause (e) of sub-rule (2) of rule 10, along with the annual statement of accounts prepared under sub-rule (1) of rule 18, and the audit report submitted by the Board under sub-rule (3) of rule 18 shall be laid on the table of the Legislative Assembly as soon as may be after it is received by the State Government from the Board.

20. *Removal of difficulties.*—(1) If any difficulty arises in giving effect to the provisions of these rules, the State Government may, by an order published in the Official Gazette, make such provisions, or may give such directions to the Board and the Committees, constituted under these rules, as are not inconsistent with the purposes of these rules and appear to it to be necessary or expedient for removing the difficulty.

(2) The Board and the Committees shall follow all such directions as may be given under sub-rule (1) from time to time.

21. *Transitory provisions.*—Notwithstanding anything contained in these rules, the existing Legal Aid Committees constituted under the Himachal Pradesh State Legal Aid to the Poor Rules, 1980 shall continue to function till the constitution of new committees under the Himachal Pradesh Legal Aid Rules, 1984.

22. *Repeal and savings.*—(1) Subject to the provisions of rule 21, the Himachal Pradesh State Legal Aid to the Poor Rules, 1980 are hereby repealed.

(2) Anything done or any action taken under the said rules (including the orders and directions given thereunder) shall be deemed to have been done or taken under these rules as if these rules were in force on the day on which such thing was done or action was taken.

BY ORDER OF THE
GOVERNOR OF HIMACHAL PRADESH.

V. P. BHATNAGAR,
Secretary (Law).

